राजस्थान में यूनानी आक्रमण

डॉ. बलवीर चौधरी

सहआचार्य – इतिहास
राजकीय महाविद्यालय जोधपुर

ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के अंतिम वर्षों में भारत की राजनीतिक अवस्था में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। उस समय मौर्य साम्राज्य का विघटन प्रारंभ हो चुका था और उत्तरी पश्चिमी सीमान्त पर यूनानियों के आक्रमण हो रहे थे। धार्मिक दृष्टि से भी यह ब्राह्मण धर्म का उत्थान का युग था। इस आन्दोलन का नेता पुष्यमित्र शुंग था, जिसने अंतिम मौर्य नरेश वृहद्रथ की हत्या करके मगध के राजसिंहासन पर अधिकार कर लिया था। पुष्यमित्र शुंग संभवतः 187 ई.पू. मगध के राजसिंहासन पर बैठा तथा 151 ई.पू. तक शासन करता रहा।[1]
पुष्यमित्र के शासनकाल में यूनानी राजाओ का भारत पर महत्वपूर्ण आक्रमण हुआ। संभवतः इसी आक्रमण का विवरण पतजंलि के महाभाष्य में मिलता है। महाभाष्य के अनुसार यवनों ने मध्यमिका (राजस्थान में चित्तौड़ के समीप नगरी नामक स्थल) तथा साकेत (अवध) को घेर लिया था।[2] राजस्थान के इतिहास की दृष्टि से भी पतजंलि के महाभाष्य का उयह उल्लेख महत्वपूर्ण है।

यह प्रश्न अभी तक भी विवादास्पद है कि पुष्यमित्र शुंग युगीन इंस यूनानी आक्रमण का नेता कौन था जो राजस्थान में मध्यमिका तक पहुंच गया था। इस समस्या का हल ढूंढ़ने के लिए यूनानी राजाओं के इतिहास पर प्रकाश डालना आवश्यक है। यद्यपि अधिकांश विद्वान यह इस बता पर एक मत है कि राजस्थान में मध्यमिका पर आक्रमण करने वाला बैक्ट्रिया का कोई यूनानी शासक था।[3]

बैक्ट्रिया के स्वतंत्र यूनानी राज्य की स्थापना प्रथम डायोडोटस नामक व्यक्ति ने सैल्कुकसी सम्राट के विरुद्ध विद्रोह करके की थी(लगभग 250 ई.पू.)। उस समय भारत में अशोक महान का शासन था। प्रथम डायोडोटस के उपरांत डायोडोटस 11 ने शासन किया।[4] उसको अपदस्थ करके किसी समय यूथीडेमस नाम के व्यक्ति ने बैक्ट्रिया पर अधिकार कर लिया। लगभग 208 ई.पू. सैल्युकसी सम्राट तृतीय एण्टियोकस ने बैक्ट्रिया पर पुनः अधिकार करने के लिए बाक्ट्र (बैक्ट्रिया की राजधानी) को घेर लिया। लेकिन कुछ समय बाद दोनो पक्षों में संधि हो गई और एण्टियोकस ने अपनी पुत्री का विवाह यूथीडेमस के पुत्र डिमिट्रियस से कर दिया।[5] इसके बाद वह काबुल की घाटी के शासक सुभागसेन से जो संभवतः मौर्य नरेश था, के साथ मैत्री करके मेसोपोटामिया लौट गया। उसके प्रत्यावर्तन के उपरांत यूथीडेमस और डिमिट्रियस ने भारत पर आक्रमण किए और एक शक्तिशाली यूनानी राज्य की स्थापना की। विशेष रुप से डिमिट्यिस के शासनकाल में बैक्ट्रिया के यूनानी शासकों की महत्वकांक्षाएं भारतोन्मुखी हुई। लेकिन दुर्भाग्यवश उसका और उसके उत्तराधिकारियों का अधिकांश इतिहास मौद्रिक साक्ष्य पर निर्भर है। साहित्य से भी इस विषय में बहुत कम सामग्री मिलती है। इसलिए भारत में यूनानी शासकों का इतिहास आज भी वाद–विवाद का विषय बना हुआ है।

यूनानी शासकों की चर्चा करते हुए टार्न महोदय ने मान्यता प्रकट की है कि मुद्राओं से ज्ञात डिमिट्रियस (यूथीडेमस का पुत्र) ने पाटलिपुत्र पर विजय प्राप्त की थी और वह अपने को यूनानियों का वास्तविक उत्तराधिकारी मानता था।[6] इसके विपरीत ए.के. नारायण ने भारतीय प्रदेशों पर विजय प्राप्त करने का श्रेय द्वितीय डिमिट्यिस को दिया। जो प्रथम डिमिट्रियस का पुत्र था।[7] दिनेश चन्द्र सरकार के अनुसार पुष्यमित्र युगीन यवन आक्रमण का नेता डिमिट्रियस था चाहे वह यूथीडेमस का पुत्र था अथवा अन्य कोई व्यक्ति [8] जबकि स्मिथ ने मान्यता प्रकट की है कि पुष्यमित्र युगीन यवन आक्रमण का नेता डिमिट्रियस न होकर मिनेण्डर था।[9] डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने जैनेन्द्र व्याकरण नामक ग्रंथ के उदाहरण से डॉ. स्मिथ के मत का समर्थन किया है।[10] हेमचन्द्र रायचौधुरी ने सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि पुष्यमित्र युगीन यवन आक्रमण का नेता डिमिट्रियस था क्योंकि साहित्यिक और मौद्रिक प्रमाणों से मिनेण्डर पुष्यमित्र का समकालीन प्रमाणित नहीं होता।[11]

अर्तेमिता के अपोलोडोरस के आधार पर स्ट्रेवो की मान्यता है कि भारत पर विजय का श्रेय डिमिट्रियस तथा मिनेण्डर दोनों को दिया जा सकता है जबकि जस्टिन ने ट्रोगस के आधार पर इस विजय का श्रेय अपोलोडोटस तथा मिनेण्डर को दिया है।[12] उपुर्यक्त मान्यता के आधार पर रैप्सन की धारणा है कि अपोलोडोटस मिनेण्डर तथा डिमिट्रियस तीनों समकालीन थे। उन्होंने अपोलोटस को डिमिट्रियस का छोटा भाई और मिनेण्डर का उसका सेनापति माना है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि जब डिमिट्रियस ने भारत पर आक्रमण किया उस समय यवन सेना दो भागों में बांट दी गई थी। सेना का

पहला भाग मिनेण्डर के नेतृत्व में पाटलिपुत्र की ओर आगे बढ़ा तथा दूसरा भाग जिसका नेता डिमिट्रियस था निचले सिंध की तरफ बढ़ा जिसका नेता डिमिट्रियस था निचले सिंध की तरफ बढ़ा।[14] लेकिन सुधाकर चट्टोपाध्याय ने रैप्सन के उपर्युक्त विचारों की आलोचना की है। चट्टोपाध्याय का मत है कि रैप्सन की मान्यता का आधार यह था कि मिनेण्डर तथा यूकेटाइडिज का वर्गाकार मुद्राएं एक समान थी इसलिए उन्होंने दोनों के शासनकाल को समान मान लिया है। डिमिट्रियस व यूकेटाइडिज का राज्य क्षेत्र समान था।[15] लेकिन मुद्राओं के इस साक्ष्य के आधार पर रैप्सन के मत को ग्रहण नहीं किया जा सकता है। क्योंकि डिमिट्रियस की मुद्राएं माविज की मुद्राओं से मेल खाती है लेकिन दोनों को समकालीन नहीं माना जाता। 1 मुद्राओं की बनावट के आधार पर गार्डनर तथा व्हाइटहैड आदि विद्वानों ने मिनेण्डर की मुद्राओं को डिमिट्रियस के शासनकाल के बाद की माना है। शिन्कोट अभिलेख के आधार पर चट्टोपाध्याय इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि डिमिट्रियस तथा मिनेण्डर समकालीन नहीं थे।[16] उनके मत की पुष्टि बौद्ध ग्रंथ मिलिन्द पन्हों से भी होती है। जिसमें कहा गया है कि मिनेण्डर भगवान बुद्ध के परिनिर्वाण के 500 वर्ष पश्चात हुआ था।[17] पेरिप्लस के लेखक (70–80 ई.) ने बेरी गग्जा (भडोच) में मिनेण्डर के सिक्के अपोलोडोटस के सिक्कों के साथ प्रचलित देखे थे।[18]

उपर्युक्त साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल में भारत पर आक्रमण करने वाले और राजस्थान के मध्यमिका नामक स्थल को घेरने वाले यवन आक्रमण का नेता डिमिट्रियस था। कालिदास के मालविकाग्निमित्र युग पुराण (गार्गी संहिता) और पतजंलि के महाभाष्य नामक ग्रंथों में उसी के आक्रमण का उल्लेख मिलता है।[19]

संदर्भ ग्रंथ –

1. दि एज ऑव इम्पीरियल यूनिटी पृष्ठ 97
2. अरुणद यबन : साकेतम् अरुणद यवनः मधमिकाम्। महाभाष्य 3.2.111
3. रायचौधुरी, प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास पृष्ठ 334
4. दि एज ऑव इम्पीरियल यूनिटी पृष्ठ 104
5. वहीं, पृष्ठ 105
6. वहीं पृष्ठ 106–107
7. नारायण ए.के. दि ग्रीक्स इन बैक्ट्रिया एंड इंडिया पृष्ठ 28 व आगे।
8. दि एज ऑव इम्पीरियल यूनिटी पृष्ठ 106
9. स्मिथ विन्सेंट : दि अर्ली हिस्टरी ऑव इंडिया पृष्ठ 211–212
10. अग्रवाल वासुदेवशरण का लेख, एन एन्शियण्ट रेफरेन्स टू मिनेण्डर्स इनवेजन, आई.
11. रायचौधुरी वही पृष्ठ 341 (1971 संस्करण)

महामहोपाध्याय पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने अपने ग्रंथ (राजपूताना का इतिहास, पृष्ठ 111) में मध्यमिका से मिनेन्डर का एक चांदी का सिक्का पाये जाने का उल्लेख किया है (जैन, के.सी. एन्शियण्ट सीटीज एंड टाउन्स ऑव राजस्थ्ज्ञान पृष्ठ 17 पर उद्धृत) बैराठ में भी यूनानी नरेशों के सिक्के मिनेण्डर, अंतियाल्किस, प्रथमस्ट्रेटो, एण्टीमेकस, हरमेया, केलआव और हरमेओ (बी.एम.एस परमार का लेख, राजस्थान के युगयुगीन सिक्के, रिसर्चर, भाग 12, पृष्ठ 4–5) लेकिन सिक्कों की प्राप्ति से यह संकेत नहीं मिलता कि राजस्थान में यवन आक्रमण का नेता कौन था ?

12. चट्टोपाध्याय, एस. अर्ली हिस्टरी ऑव नार्द इंडिया पृष्ठ 6 पर उद्धृत।
13. रैप्सन, कैम्ब्रिज हिस्टरी ऑव इंडिया, भाग 1 पृष्ठ 543
14. टार्न, डब्ल्यू, डब्ल्यू दि ग्रीक्स इन बैक्ट्रिया एंड इंडिया पृष्ठ 142
15. चट्टोपाध्याय, वही पृष्ठ 6–7 रैप्सन वही।
16. चट्टोपाध्याय वहीं पृष्ठ 7
17. मिलिन्द पन्हो, सम्पादक ट्रेकनर पृष्ठ 3
18. चट्टोपाध्याय वहीं पृष्ठ 8
19. कालीदास माल विकाग्निमित्र, (चौखम्भा संस्करण) पृ. 227–228 युग पुराण संख्या 9 मनकड पृ. 33 महाभाष्य 3.2. 111